RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-01
January-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

रीवा जिले में औषधीय कृषि विकास की समस्याएँ

जानकी शरण पाठक

शोधार्थी, भूगोल, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश

प्रकृति शब्द अपने आप में एक विशिष्ठ अर्थ का आभाष दिलाता है जिसमें सम्पूर्ण मानव सभ्यता समाहित है। प्रकृति के विभिन्न स्वरूपों व विविधताओं को आंकलन करने हेतु मानव प्राचीन काल से ही सदैव प्रयासरत रहा है। यही प्रकृति मानव को अपनी ओर प्राचीन काल कस ही आकर्षित करती आ रही है, तथा मानव की प्रत्येक आवश्यकताओं की पूर्ति भी प्रकृति स्वयं एवं मानव अपने बुद्धिबल द्वारा अतीत से करता आ रहा है।

जब मानव का पृथ्वी में पदार्पण हुआ तो वह अपने आपको विभिन्न स्वरूपों के बीच घिरा पाया अर्थात् मनुष्य ने जब अपनी जिज्ञासा को क्रियान्वित करना प्रारम्भ किया तो वह अपने को प्रकृति से चारो ओर घिरा हुआ पाया एवं यही प्रकृति मानव के प्रत्येक क्रियाकलापों पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हस्तपक्षेप करती रही है, जो मानव ने स्वीकार किया है।

प्राचीन काल से ही मानव संघर्षमय जीवन जीता आ रहा है, और अपनी उदर पूर्ति हेतु वनों उपजों तथा भरण पोषण व आखेट क्रियाओं द्वारा भोजन प्राप्त करता रहा है तथा भोजन की अल्पता को समझकर मानव ने कृषि की ओर अग्रसर होना उचित माना और कृषि कार्य करने लगा। आसपास के फूल पत्तों व जड़ी बूटियों इत्यादि का प्रयोग कर उपचार करना प्रारम्भ कर दिया और वही जड़ी बूटियाँ व औषधीय पत्तियों व पौधे मानव जीवन का अंग बन गए।

आदिम मानव द्वारा औषधीय पौधों के उपयोग के बारे में कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं मिलता है जबकि खास बीमारियों के उपचार में उपयोग होने वाली औषधीय पौधों की जानकारी प्राचीन मानव सभ्यता को थी, जिसके कई ऐतिहासिक प्रमाण देखने को मिलते हैं।

उद्देश्य–

जिले की स्थलीय एवं प्राकृतिक संरचना पूर्णतः औषधीय कृषि के लिए अनुकूल है। यहाँ की प्राकृतिक जलवायु व जीवन दायनी नदियाँ व वर्षा के यहाँ के औषधीय कृषि को प्रोत्साहित करने में सदैव अग्रणी रहा है, तथा सभी अनुकूलतम परिस्थितियाँ होने के बावजूद भी सम्बन्धित क्षेत्र में सर्वाधिक औषधीय कृषि उत्पादन नहीं हो सका है जबकि अन्य क्षेत्रों में उत्पादन सर्वोत्तम रहा है। शोधार्थी का यह उद्देश्य है कि यहाँ उन कारकों को सामने लाकर उनका चयन कर तथा उनका निदान करने का प्रयास करना है, ताकि अन्य क्षेत्रों की भाँति जिले में औषधीय कृषि का विकास व उत्पादन सर्वोत्तम हो सके।

भारतवर्ष में पायी जाने वाली विभिन्न प्राकृतिक वनस्पति का उपयोग एवं संग्रह मात्र है, जो मानव कल्याण के क्षेत्र में विश्व की प्राचीनतम धरोहरों में से है, भारतीय जनमानस में औषधीय गुणों से युक्त झाड़ियाँ, वृक्ष, वृक्षों की छाल, जड़, तने, फल, फूल कन्द व खरपतवार इतने महत्वपूर्ण रहे हैं, कि आम लोग इनके उपयोग कर गंभीर बीमारियों का उपचार करते थे। उस समय चिकित्सकों का आभाव था, अतः समाज के अनुभव युक्त बुजुर्गों से समझकर सही जड़ी बूटियों से लोग अपना इलाज करते थे। समय के साथ–साथ मानव सभ्यता व संस्कृति में परिवर्तन होना प्रारम्भ हो गया, जिसका प्रभाव भारतीय संस्कृति पर भी प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूपों में प्रभाव दिखलाई देने लगे। जिसका परिणाम आयुर्वेद से एलोपैथी चिकित्सा पद्धति के रूप में परिवर्तित हो गई। वर्तमान समय में असाध्य रोगों का निदान इन्हीं प्राकृतिक जड़ी बूटियों से होता है, अतः इन्हीं औषधीय पौधों का महत्व को देखकर औषधीय कृषि की जाने लगी है।

अध्ययन क्षेत्र रीवा में भी औषधीय कृषि के लिए पर्याप्त संभावनाएँ हैं, यहाँ की धरातलीय विभिन्नताएँ एवं प्राकृतिक परिवेश पूर्णतः औषधीय कृषि के लिए अनुकूल हैं। रीवा जिला पूर्णतः पठारी भू भाग है, यहाँ विन्ध्यन श्रेणी उच्च भाण्डेर, बालुकारा, निम्न भाण्डेर ऊपर कैमूर बालुकारण/भाण्डेर चूना प्रस्तर के निक्षेप पाये जाते हैं।

अतः प्राकृतिक वनस्पतियों के प्राचीन समय से लेकर आधुनिक काल तक के अवयवों का तंत्र चर्मोत्कर्ष पर है। जिसके परिणामस्वरूप यहाँ औषधीय गुणों से परिपूर्ण गुल्मलता, कंद पादप, घास एवं पौधे इत्यादि यहाँ अत्यधिक संख्या में देखे जा सकते हैं। लेकिन बढ़ती हुई जनसंख्या के प्रभाव भी यहाँ देखने को मिलता है, जिस कारण इन्हीं औषधीय क्षेत्र में आबादी के कारण क्षेत्र सिकुड़ता जा रहा है जिसको ध्यान में रखकर इन्हीं औषधीय क्षेत्रों को संरक्षित करते हुए सुरक्षित करने के प्रयास भी युद्धस्तर पर प्रारम्भ कर दिए गये हैं।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

रीवा जिले में उत्पादित औषधियाँ

रीवा जिले की धरातलीय विभिन्नताओं एवं प्राकृतिक वातावरण उत्तम वर्षा व मिट्टियाँ व जलवायु यहाँ के औषधीय कृषि के अनुकूल है, जिसके कारण बृहद भू–भागों में औषधीय कृषि कार्य प्रारम्भ हो गये है, यहाँ के कृषक भी औषधीय पौधों के महत्व को जानकर अपने खेतों, खलिहानों के व्यापक स्तर पर औषधीय कृषि करने लगे हैं, अतः यहाँ सभी प्रकार के औषधीय कृषि उत्पादन होने लगा है।

प्राकृतिक अवस्था में इनके उपलब्ध वाले क्षेत्रों को संरक्षित करने एवं कृषि कार्यों द्वारा इनके उत्पादन में वृद्धि की संभावना में इस भू–भाग को औषधीय पौधों के क्षेत्र के रूप में चिन्हित किया गया है, सफेद मूसली, अश्वगंधा, गुडमार, सर्पगंधा, पत्थरचटा, आँवला, हर्र बहेरा, बेल, तुली, गुगल, सतावरी, कालामेघ, चिरायता एवं घृतकुमारी हल्दी (हरमेरिक) अदरक (जिस्टर) पथरचटा, सोया, सतावर, लाजवन्ती आदि प्रमुख हैं।

रीवा जिले के औषधीय कृषि विकास की समस्याएँ एवं सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन में रीवा जिले में औषधीय कृषि की पर्याप्त संभावनाएयें पाई जाती हैं, तथा रीवा जिले के औषधीय गुणों से युक्त पौधों की पहचान क्षेत्रीय वितरण इनकी वर्तमान दशा के अध्ययन के साथ–साथ कृषि कार्य द्वारा औषधीय पौधों के उत्पादन तथा उनके विकास के लिए एक संधारन के साथ में रचनात्मक भूमिका के परीक्षण का सफल प्रयास किया जा रहा है। यद्यपि अध्ययन क्षेत्र जिला रीवा में कृषि सम्बन्धी अनेक प्रकार की समस्याएँ विद्यमान हैं।

बढ़ती आबादी की आवश्यकता को पूरा करने के लिए अनेकों नेक निर्माण कार्य के चलते वनस्पतियों एवं पादप प्रजातियों का तीव्र गति से विनाश हो रहा है, जिले में भवन निर्माण, नवीनतम स्वपरिवहन साधनों व सड़कों का विस्तार व्यापारिक एवं आवासीय भव्य भवनों के निर्माण सेतुओं एवं अनियंत्रित भूमि व अयस्क खादानों की बढ़ती संख्या भी एक समस्या है। साथ ही ऊर्जा क्षेत्रों से सम्बन्धित विकास (बदवार पहाड़ी क्षेत्रों सौर्य–ऊर्जा संयंत्रों में निर्माण) साथ ही गुढ़ तहसील के अन्तर्गत बदवार पहाड़ी क्षेत्रों में सौर्य ऊर्जा संयत्रों के निर्माण आदि से व्यापक स्तर पर वहाँ स्थिति औषधीय पौधों का विनाश हो गया है।

अतः लगातार विकास एवं मार्गों के विस्तार के परिणाम स्वरूप जिले के अन्तर्गत औषधीय कृषि क्षेत्रों की परिस्थिति भी परिवर्तित हो गई है, जिसके परिणाम स्वरूप वनस्पति क्षेत्रों व औषधीय कृषि क्षेत्रों में अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं इनके अलावा भी अनेक समस्याएं हैं जो रीवा जिले के औषधीय कृषि के विकास में बाधाऐं उत्पन्न करती हैं। जो निम्नानुसार हैं–

- प्राकृतिक समस्याऐं
- आर्थिक समस्याऐं
- सामाजिक समस्याऐं
- सांस्कृतिक समस्याऐं
- शासकीय प्रयासों का आभाव
- औषधीय कृषि प्रशिक्षण केन्द्रों का आभाव
- उत्तम मार्गदर्शक संस्थाओं का आभाव
- भूमि का अध्यधिक क्षरण समस्या
- भू–भाग पड़ती समस्या
- उचित भण्डारण केन्द्रों का आभाव मुनाफाखोरी–निर्धनता, भुखमरी
- अन्य समस्याऐं, अनियंत्रित भूमि उपयोग आदि।

उपरोक्त व्यवस्था के आधार पर यह कहा जा सकता है कि रीवा जिले के सभी विकासखण्डों में औषधीय कृषि की प्रबन्ध समस्याऐं हैं, कृषि के विकास से स्वरोजगार बढ़ने की बहुत संभावनाऐं हैं।

अतः यहाँ के लोगों के लिए औषधीय कृषि के प्राप्त कच्चा माल जड़ी बूटियों से आय प्राप्त कर आर्थिक एवं सामाजिक स्तर सुधारने का सुनहरा अवसर प्राप्त हो सकेगा। बढ़ती हुई माँग को ध्यान में रखकर विकास करने की विशेष आवश्यकता है। जिससे भविष्य में अन्य क्षेत्रों की भाँति रीवा जिले में भी अधिक से अधिक मात्रा में औषधीय कृषि को उन्नत व विकसित कर रीवा जिले को औषधीय कृषि उत्पादन के क्षेत्र में विशेष स्थान प्राप्त हो सके।

सन्दर्भ–

1. शर्मा श्री कमल (2016) भारत का भूगोल, पृ0सं0–270–71
2. कोल शर्मिला देवी (2016) इण्टरनेशल जनरल एजूकेशन इण्ड रिसर्च रीवा जिले के जवा विकासखण्ड में क्षरण का पर्यावणीय प्रभाव, पृ0सं0–51–55
3. कृषि मंत्रालय, (2015), एग्रीकल्चरण स्टेटिस्टिक्स एट ए ग्लांस, कृषि मंत्रालय, नई दिल्ली।
4. सेन, अभिजीत (2017), एग्रीकल्चर एम्पलायमेंट एवं पॉवर्टी : रिसेंट ट्रेंड्स इन रूरल इण्डिया इन रामचन्द्रन, तूलिका बुक्स, नई दिल्ली।
5. चौधरी, बी.एन. (2014), कृषि विज्ञान केन्द्र– ए गाइड फार दी के वी के. मैनेजर्स, आईसीएआर, नई दिल्ली।

RRIJM 2015, All Rights Reserved